1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।
ऋग्वेद 1/15/5

हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।

O Lord !
your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 40, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 जनवरी, 2017 से रविवार 22 जनवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
7 जनवरी से 15 जनवरी, 2017

नौ दिनों तक चला साहित्य प्रचार यज्ञ सम्पन्न

'शंका समाधान' व 'मनु का विरोध क्यों-गोष्ठी' से रहा चर्चित

साहित्य मंच से पहली बार हुई आर्यसमाज की चर्चा

पुस्तक प्रेम के आगे बेअसर रहा नोटबन्दी एवं शीत लहर का प्रभाव

10/- रुपये में 500 पृष्ठों की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश रही विशेष आकर्षण

नेशलन बुक ट्रस्ट, भारत सरकार की ओर से प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेला 15 जनवरी को अभूतपूर्व सफलता एवं अप्रतिम स्मृतियों के साथ समाप्त हो गया। हिन्दी साहित्य हॉल में आर्यसमाज का स्टाल इस वर्ष विशेष चर्चा

एम.डी.एच. की ओर से टीवी चैनलों पर स्क्रोल लाइन विज्ञापन प्रसारित कराने के लिए महाशय धर्मपाल जी का हार्दिक धन्यवाद

में रहा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से इस वर्ष साहित्य प्रचार के लिए हिन्दी साहित्य के 10 एवं एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य के आरक्षित कराया गया था।

सभा ने मेले के शुभारम्भ से पूर्व में ही प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया था, जिससे सभा के स्टाल पर पहले ही दिन से लगभग पहले ही दिन से सैंकड़ो की

विश्व की प्राचीतम पुस्तक वेद के संस्करणों में दिखाई पुस्तक प्रेमियों ने रूचि

संख्या में पुस्तक प्रेमी पहुचने लगे थे और इन सबकी सेवा के लिए विभिन्न आर्यसमाजों अधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं की 35 से अधिक सदस्यों की टीम उपलब्ध थे। एक अनुमान के अनुसार – शेष पृष्ठ 5 पर

35 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने उत्साह से किया कार्य
समस्त कार्यकर्ताओं एवं दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद

बाएं – पुस्तक मेले के अवसर पर शंका समाधान कक्ष में आचार्य भद्रकाम वर्णी जी, हैदराबाद से अपने ब्रह्मचारियों के साथ उपस्थित आचार्य उदयन जी। दाएं – विभिन्न मतों के अनुयायियों ने भी दिखाई गहरी दिलचस्पी।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

मंगलवार 31 जनवरी, 2017 प्रातः 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 31 जनवरी, 2017 को प्रातः 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाएगा। अतः जिन विद्यालयों ने अभी तक अपने विद्यालय के बच्चों की संख्या सूची न भेजी हो, उनसे निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

– सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10)
तद्नुसार 21 फरवरी, 2017 (मंगलवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणाप्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **21 फरवरी** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। अतः आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। – महामन्त्री

17वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन : रविवार 22 जनवरी, 2017 : प्रातः 10 से 2 बजे

आयोजन स्थल : आर्यसमाज अशोक विहार-1, दिल्ली-110052

सभी प्रतिभागी स्वयं माता-पिता के साथ पधारें। आयोजन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था की जाएगी। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य बच्चों के साथ पधारें। – अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक एस. पी. सिंह, संयोजक (9540040324)

वेद-स्वाध्याय

हम अनृण हों

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम।। -अ. 6/117/3
ऋषिः **कौशिकः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **अस्मिन् अनृणाः**= इस लोक में हम अनृण हों, **परस्मिन् अनृणाः**= परले लोक में अनृण हों और **तृतीये लोके अनृणाः स्याम**= तीसरे लोक में भी अनृण हों, ये **देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः**= जो देवयान या पितृयान मार्गों के लोक हैं उनमें **सर्वान् पथः**=सब मार्गों में चलते हुए हम **अनृणाः आ क्षियेम**=ऋणमुक्त होकर रहें, बसें।

विनय - मनुष्य तो जन्म से ही कुछ ऊँचे ऋणों से बँधा हुआ है। मनुष्य उत्पन्न होते ही ऋणी है और उन वास्तविक ऋणों से मुक्त होना ही मनुष्य-जीवन की इतिकर्त्तव्यता है। मनुष्य ने संसार के तीनों लोकों को भोगने के लिए जो तीन शरीर पाये हैं, उसी से वह तीन प्रकार से ऋणी है। हे प्रभो! हम चाहे पितृयाण मार्ग के यात्री हों या देवयान के, हम इन तीन लोकों की अनृणता करते ही रहें। हम अपनी सब शक्ति और सब यत्न इन ऋणों को उतारने में ही व्यय करते हुए जीवन बिताएँ। इस स्थूल भूलोक का ऋण अन्यों को भौतिक सुख देने से, तथा समाज को कोई अपने से श्रेष्ठतर भौतिक सन्तान दे जाने से उतरता है। इसी प्रकार मनुष्यों को जगत् की प्राकृतिक अग्नि आदि शक्तियों से तथा साथी मनुष्यों की निःस्वार्थ सेवाओं से जो सुख निरन्तर मिल रहा है उसके ऋण को उतारने के लिए, इन यज्ञ-चक्रों को जारी रखने के निमित्त उसे यज्ञकर्म करना भी आवश्यक है और तीसरे ज्ञान के लोक से मनुष्य को जो ज्ञान का परम लाभ हो रहा है, उसकी सन्तति भी चालू रखने के लिए स्वयं विद्या का स्वाध्याय और प्रवचन करके उससे उसे अनृण होना चाहिए। जो त्यागी लोग सांसारिक भोग की कामना नहीं करते अतएव जिन्हें ये तीन ऋण इस प्रकार नहीं बाँधते, उन ब्रह्मचर्य, तप, श्रद्धा के मार्ग से चलनेवाले देवयान के यात्रियों को भी अपने तीनों शरीरों के उपयोग लेने का ऋण चुकता करना चाहिए, अर्थात् अपने भौतिक शरीर से वे बेशक सन्तान उत्पन्न करना आदि न करें पर शरीर द्वारा सेवा के अन्य स्थूल कर्म उन्हें करने ही चाहिएँ; और अपने प्राण व मन के दूसरे शरीर से प्रेम, दया आदि की धाराएँ बहानी चाहिएँ; तथा द्युलोक-सम्बन्धी तीसरे विज्ञानमय शरीर द्वारा ज्ञान-सूर्य बनकर ज्ञान की किरणें प्रसारित करते हुए तीसरे लोक में भी अनृण होना चाहिए।

अहो! मनुष्य तो सर्वदा ऋणों से लदा हुआ है! जो जीव इस त्रिविध शरीर को पाकर भी अपने को ऋणबद्ध अनुभव नहीं करता वह कितना अज्ञानी है! हमें तो, हे स्वामिन्! ऐसी बुद्धि और शक्ति दो कि हम चाहे देवयानी हों या पितृयानी, हम सब लोकों में रहते हुए, सब मार्गों पर चलते हुए, लगातार अनृण होते जाएँ। अगले लोक में पहुँचने से पहले पूर्वलोक के ऋण हम अवश्य पूरे कर दें। अगले मार्ग पर जाते हुए पिछले मार्ग के ऋण उतार चुके हों। इस प्रकार लगातार घोर यत्न करते हुए हम सदा, सब लोकों में अनृण होकर ही रहें।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक **प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

हम तो मरने के बाद रो भी नहीं सकते !!!

यह खबर उन लोगों को जरूर पढ़ लेनी चाहिए जो सीरिया, फिलिस्तीन और म्यांमार के मुस्लिमों की बात कर दुःख जता रहे हैं और वह भी पढ़ें जो कुछ समय पहले गाजा पट्टी के मुस्लिमों की पीड़ा लेकर दिल्ली में धरने प्रदर्शन कर रहे थे। शायद इससे उन मीडियाकर्मियों की भी संवेदना जागनी चाहिए जो एक सीरियाई बच्चे एलन कुर्दी की लाश को दफनाने तक विलाप करती रही थी। खबर है कि पाकिस्तान के खैबर पख्तूनवा और कबायली इलाकों में रहने वाले हिन्दू शमशान घाट की सुविधा न होने के कारण अपने मृतकों को जलाने के बजाय अब उन्हें कब्रिस्तान में दफनाने पर मजबूर हो गए हैं। इन इलाकों में हिन्दू समुदाय हजारों की तादाद में पाकिस्तान की स्थापना से पहले से रह रहे हैं। खैबर पख्तूनवा में हिन्दू समुदाय की आबादी लगभग 50 हजार है। इनमें अधिकतर पेशावर में बसे हुए हैं। इसके अलावा फाटा में भी हिन्दुओं की एक अच्छी खासी तादाद है। ये अलग-अलग पेशों में हैं और अपना जीवन गुजर-बसर करते हैं। पिछले कुछ समय से हिन्दू समुदाय के लिए खैबर पख्तूनवा और फाटा के विभिन्न स्थानों पर शमशान घाट की सुविधा न के बराबर ही रह गई है। इस वजह से अब वे अपने मृतकों को धार्मिक अनुष्ठानों के उलट यानी जलाने के बदले दफनाने के लिए मजबूर हो चुके हैं।

चलो एक बार को मान लिया पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देशों में जीवित हिन्दुओं या सिख-बौद्ध को कोई अधिकार नहीं है लेकिन क्या मृत शरीर जिसे देखकर इंसानी समाज में धर्म से परे होकर संवेदना के अंकुर फूटते हैं लेकिन यहाँ तब भी गुस्सा और कट्टरवाद। आखिर कहाँ गये वह मानवाधिकारवादी जो मुम्बई में एक मुसलमान को बिल्डर द्वारा किराये पर फ्लैट नहीं देने के कारण सड़कों पर लेट गये थे। आज वह पाकिस्तान और बंगलादेश के हिन्दुओं की बात क्यों नहीं करते हैं? जबकि यह लोग तो सिर्फ अंतिम संस्कार के लिए थोड़ी सी भूमि मांग रहे हैं। पेशावर में ऑल पाकिस्तान हिन्दू राइट्स के अध्यक्ष और अल्पसंख्यकों के नेता हारून सर्वदयाल का कहना है कि उनके धार्मिक अनुष्ठानों के अनुसार वे अपने मृतकों को जलाने के बाद अस्थियों को नदी में बहाते हैं, लेकिन यहां शमशान घाट की सुविधा नहीं है इसलिए वे अपने मृतकों को दफनाने के लिए मजबूर हैं।

उन्होंने कहा कि केवल पेशावर में ही नहीं बल्कि राज्य के ठीक-ठाक हिन्दू आबादी वाले जिलों में भी यह सुविधा न के बराबर है। इन जिलों में कई सालों से हिन्दू समुदाय अपने मृतकों को दफना रहा है। वह कहते हैं, पाकिस्तान के संविधान की धारा 25 के अनुसार हम सभी पाकिस्तानी बराबर अधिकार रखते हैं और सभी अल्पसंख्यकों के लिए कब्रिस्तान और शमशान घाट की सुविधा प्रदान करना सरकार की सर्वोच्च जिम्मेदारी है, लेकिन दुर्भाग्य से न केवल हिन्दू बल्कि सिखों और ईसाई समुदाय के लिए भी इस बारे में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। हारून सर्वदयाल के अनुसार हिन्दुओं और सिखों के लिए अटक में एक शमशान घाट बनाया गया है लेकिन ज्यादातर हिन्दू गरीब परिवारों से संबंध रखते हैं जिसकी वजह से वह पेशावर से अटक तक आने-जाने का किराया वहन नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि पेशावर के हिन्दू पहले अपने मृतकों को बाड़ा के इलाके में लेकर जाया करते थे क्योंकि वहाँ एक शमशान घाट था लेकिन शांति की बिगड़ती स्थिति के कारण वह क्षेत्र अब उनके लिए बंद कर दिया गया है।

वह दावा कर कहते हैं कि पाकिस्तान भर में पहले अल्पसंख्यकों के हर छोटे बड़े शहर में धार्मिक केंद्र या पूजा स्थल थे लेकिन दुर्भाग्य से उन पर या तो सरकार या भूमि माफिया ने कब्जा कर लिया जिससे अल्पसंख्यकों की मुसीबतें बढ़ी हैं। जिस तरह पाकिस्तान के बनने के समय अल्पसंख्यक अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे थे, उनके हालात में 70 साल बाद भी कोई बदलाव नहीं आया है। वे आज भी अपने अधिकारों से वंचित हैं। "पाकिस्तानी हिन्दुओं के अनुसार यदि कोई हिन्दू मर जाता है तो उसकी लाश को जलाने भी नहीं दिया जाता है। मुसलमान कहते हैं कि लाश जलाने से बदबू होती है इसलिए लाश को दफना दो। इसलिए वहां के हिन्दू अपने किसी परिजन के मरने पर रो भी नहीं पाते हैं। डर रहता है कि यदि रोए तो पड़ोस के मुस्लिमों को किसी के मरने की जानकारी हो जाएगी और वे आकर कहने लगेंगे कि चलो कब्र खोदो और लाश को दफना दो। ऐसा करने से मना करने पर हिन्दुओं के साथ मार-पीट शुरू कर दी जाती है।

कई जगह यहाँ के हिन्दू इन सबसे बचने के लिए रात होने का इन्तजार करते हैं और गहरी रात होने पर अपने मृत परिजन का अन्तिम संस्कार कहीं दूर किसी नदी के किनारे कर आते हैं। लाश को आग के हवाले करने के बाद वे लोग वहां से भाग खड़े होते हैं, क्योंकि यह डर रहता है कि आग की लपटें देखकर मुसलमान आ धमकें और हिन्दुओं पर हमले न कर दें। यही वजह है कि हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में पाकिस्तानी हिन्दू किसी भी तरह भारत आ रहे हैं। यह लोग यहां मानवाधिकारवादियों की हर चौखट पर हाजिरी लगाते हैं, अपनी पीड़ा बताते हैं, लेकिन गाजापट्टी पर आसमान सिर पर उठाने वाले ये मानवाधिकारवादी पाकिस्तान के हिन्दुओं पर अपने मुंह पूरी तरह बन्द रखते हैं। जबकि सब जानते हैं कोई कितना भी धार्मिक अधार्मिक क्यों न हो पर जन्म, मरण और परण समाज में यह तीन पल ऐसे होते हैं जिनमें धर्म की न चाहकर भी जरूरत होती है। फिर भी हम तो एक ऐसे देश से हैं जो हमसे सिर्फ मानवता के नाते यह गुहार लगा रहे हैं कि धर्म के हिसाब से जीने नहीं देते तो कम से कम मर तो जाने दो!

- सम्पादक

बोध कथा

प्रभु-भक्ति की कामना

ध्रुव की कथा तो आप जानते हैं। छोटा-सा वह बालक एक आसन में बैठकर घोर तप कर रहा था। हर प्रकार के मोह को त्यागकर, भक्ति में मग्न होकर, दुनिया को भूलकर, भगवान् को याद कर रहा था। तभी भगवान् ज्योति बनकर उसके सामने आ खड़े हुए, बोले-"अरे ओ नन्हे भक्त! बोल, क्या चाहता है तू? मांग, क्या मांगता है? मैं आ गया हूं।"

ध्रुव ने कहा-"मैं व्यापारी नहीं। सब-कुछ देकर कुछ लेने को नहीं आया। मैं केवल भक्ति के लिए भक्ति करता हूं। मैं तुमसे तुमको मांगता हूं।"

यह है मेधा से ऋतम्भरा तक पहुंचने का ढंग। पूर्ण श्रद्धा, अटल विश्वास और सच्चे ज्ञान के साथ ईश्वर-भक्ति और उस ईश्वर-भक्ति का सबसे सीधा, सबसे सरल और सबसे महान् मार्ग-दर्शक है-ओ३म्।

-साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

भारतीय सेना को परोसे जाने वाले भोजन का मुद्दा

सैनिक का थाल या गम्भीर सवाल?

बीएसएफ के एक जवान तेज बहादुर यादव ने विडियो जारी करके घटिया खाना दिए जाने और अफसरों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया जिसके बाद एक-एक कर कई जवान अपनी परेशानी लेकर सामने आये। इस सब के बाद देश में एक बहस शुरू हो गई है। क्या सीमा पर जवानों को भरपेट खाना मिलता है या नहीं? क्या सैनिक अफसरशाही से त्रस्त हैं? आदि-आदि कई सवाल सोशल मीडिया के मध्यम से लोगों तक आये हैं। इसमें एक तरफ जहाँ कुछ लोगों ने दावा किया है कि कुछ अफसर राशन और अन्य चीजें गांवों में आधी कीमत पर बेच देते हैं, वहीं कुछ पूर्व सैनिकों ने खराब खाना परोसे जाने की खबर को खारिज किया है। हालाँकि पिछले दिनों CAG की एक रिपोर्ट में भी यह बात सामने आई थी कि कई जगह देश के सैनिक खाने की क्वालिटी, मात्रा और स्वाद से संतुष्ट नहीं है। जबकि अन्य जगह तैनात कुछ जवान कह रहे हैं कि हो सकता है कि यादव के आरोप उनके निजी पसंद पर आधारित हों। हमारे मेस का खाना औसत है, लेकिन इतना भी बुरा नहीं जितना कि तेज बहादुर बता रहे हैं। ''इंटरनैशनल बॉर्डर पर तैनाती की तुलना में लाइन ऑफ कंट्रोल पर सेवाएं देना बेहद मुश्किल होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि मौसम और इलाका, दोनों ही चुनौतियां पैदा करते हैं। फिर भी राशन सभी को मिलता है। अच्छी क्वालिटी का यह राशन अच्छी मात्रा और विकल्पों के तौर पर उपलब्ध होता है।

जवान के द्वारा पोस्ट की गयी इस वीडियो को करीब पोने दो लाख लोग शेयर कर चुके हैं जिसे करीब 31 लाख लोगों ने देखा। वीडियो को देखने के बाद न्यूज चैनल और सोशल मीडिया के जरिये सेना के लिए काफी संजीदगी लोगों के अन्दर दिखाई दे रही है। जो होनी भी चाहिए आखिर गर्मी, धूप, बरसात हो या कड़ाके की ठण्ड जिस मुस्तैदी से जवान अपनी ड्यूटी कर देश की सीमाओं की सुरक्षा कर रहे हैं यदि उन्हें ठीक से रोटी भी नसीब नहीं होगी तो फिर हमारा विश्व की सुपरपावर बनने का सपना बेमानी सा लगता है। क्योंकि सीमा पर जवान और खेत में किसान किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत होती है। जवान ने जिस तरह इस वीडियो में कहा कि इसके बाद मैं जीवित रहूँ या ना रहूँ लेकिन मेरी बात देश के सिस्टम के खिलाफ उठनी चाहिए। उपरोक्त कथन भी लोगों की संवेदना को झिंझोड़ता सा नजर आया। हालाँकि बी. एस. एफ. ने जवान पर इसके उलट गंभीर आरोप लगाते हुए सफाई देते हुए कहा कि जवान तेजप्रताप की मानसिक हालत ठीक नहीं है वह अक्सर शराबखोरी, बड़े अधिकारियों के साथ खराब व्यवहार के आचरण से जाना जाता रहा है। वर्ष 2010 में तो एक उच्च अधिकारी को बन्दूक दिखाने के जुर्म में उसे 90 दिनों की जेल भी हो चुकी है। बीएसएफ और जवान तेज बहादुर यादव के आरोप-प्रत्यारोप झूटे हैं या सच्चे यह तो अभी कहा नहीं जा सकता लेकिन इस मामले की केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा निष्पक्ष जाँच जरूर होनी चाहिए।

जहां एक ओर सीमा सुरक्षा बल के जवान तेजबहादुर ने सेना में व्यापात भ्रष्टाचार को उजागर करने का दावा किया है वहीं कुछ लोग इसे जवान की महज नाराजगी बता रहे हैं। पर इस बहस में यह सवाल जरुर उठना लाजिमी है कि क्या सेना अंदरूनी रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त है? यदि देश की आजादी के बाद तुरन्त हुए जीप घोटाले को अलग भी रख दें तो कारगिल युद्ध में शहीद सैनिकों के लिए ताबूत में भी घोटाला सामने आया था। 2007 में लद्दाख में मीट घोटाला और 2006-07 में ही अंडा और शराब घोटाला सामने आया था। एक अन्य राशन घोटाले में लेफ्टिनेंट जनरल एस. के. साहनी को दोषी पाए जाने के बाद जेल भेजा गया था। इससे साफ जाहिर होता है कि सेना और अर्धसैनिक बलों के अन्दर भ्रष्टाचार की जड़ें काफी हद तक समाई हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक सैनिक के लिए हर महीने 2905 का भोजन भत्ता सरकार की ओर से देय होता है हर वर्ष सेना तकरीबन 1440 करोड़ रूपये का राशन जवानों के लिए खरीदती है। सैनिकों को मौसम के हिसाब से पौष्टिक आहार सरकार जारी करती है लेकिन इसके बाद भी भोजन की शिकायत आती है क्यों? यह कारण जवानों के सामने स्पष्ट होने चाहिए।

....बहस में यह सवाल जरुर उठना लाजिमी है कि क्या सेना अंदरूनी रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त है? यदि देश की आजादी के बाद तुरन्त हुए जीप घोटाले को अलग भी रख दें तो कारगिल युद्ध में शहीद सैनिकों के लिए ताबूत में भी घोटाला सामने आया था। 2007 में लद्दाख में मीट घोटाला और 2006-07 में ही अंडा और शराब घोटाला सामने आया था। एक अन्य राशन घोटाले में लेफ्टिनेंट जनरल एस. के. साहनी को दोषी पाए जाने के बाद जेल भेजा गया था। इससे साफ जाहिर होता है कि सेना और अर्धसैनिक बलों के अन्दर भ्रष्टाचार की जड़ें काफी हद तक समाई हैं।....

दरअसल भ्रष्टाचार का यह कोई अकेला मामला नहीं है समय-समय पर यहाँ इस तरह के मामले उठते रहे हैं यदि खाने-पीने के मामले को ही ले लिया जाये तो सरकारी केंटिन हो या सरकारी स्कूलों में मिड-डे-मील अक्सर शिकायते सुनने को मिल ही जाती है। अभी हाल में नोटबंदी के दौरान सबने देखा था किस तरह काले धन के खिलाफ लागू हुई मुहीम में कुछ बैंकों द्वारा काले धन को सफेद करने का कार्य लोगों के सामने आया था। यह मानव स्वभाव होता है कि किसी भी कार्य को व्यक्ति कम से कम कष्ट उठाकर प्राप्त करलेना चाहता है। वह हर कार्य के लिए एक छोटा और सुगम रास्ता खोजने का प्रयास करता है। इसके लिए दो रास्ते हो सकते हैं- एक रास्ता नैतिकता का हो सकता है जो लम्बा और कष्टप्रद भी हो सकता है और दूसरा रास्ता है छोटा किन्तु अनैतिक रास्ता। लोग अपने लाभ के लिए जो छोटा रास्ता चुनते हैं उससे खुद तो भ्रष्ट होते ही हैं दूसरों को भी भ्रष्ट बनने में बढ़ावा देते हैं।

कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी होती हैं जहाँ मनुष्य को दबाव वश भ्रष्टाचार करना और सहन करना पड़ता है। इस तरह का भ्रष्टाचार सरकारी विभागों में बहुतायत से दिखता है। वह चाह कर भी नैतिकता के रास्ते पर बना नहीं रह पाता है क्योंकि उसके पास भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए अधिकार सीमित और प्रक्रिया जटिल होती है। इस सैनिक के दावे में कितना सच है कितना झूठ इसकी अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई किन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि कोई मामला ऐसा हुआ ही न हो, एक कहावत है जहाँ आग लगी होती है धुँआ वहीं से निकलता है। सरकार को चाहिए इस मामले को यहीं दबाने के बजाय इस पर त्वरित, उचित और निष्पक्ष कार्यवाही करे। क्योंकि जवान किसी सरकार पर नहीं बल्कि कुछ उच्च अधिकारियों पर आरोप लगा रहा है सरकार को सोचना चाहिए एक सिपाही देश के दुश्मन के तो छक्के छुड़ा सकता है लेकिन भूख के नहीं!!

-राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

एक आप बीती

मैं स्कूल का अध्यापक था। मेरे लेखों के कारण तथा सामाजिक गतिविधियों के कारण आर्यजगत् के बहुत लोग मुझे जानते थे। हिन्दी सत्याग्रह के पश्चात् मैं स्कूल छोड़कर दयानन्द कॉलेज हिसार की एम. ए. कक्षा में प्रविष्ट हो गया। कॉलेज के प्राचार्य थे प्रिं. ज्ञानचन्द्रजी (स्वामी मुनीश्वरानन्दजी) हिसारवाले।

वे यदा-कदा मुझे व्याख्यान तथा प्रचार के लिए भी, कभी कहीं जाने को कह देते। कॉलेज में प्रविष्ट हुए एक-दो सप्ताह ही बीते कि उन्होंने आर्यसमाज, माडल टाउन के साप्ताहिक सत्संग में मेरा व्याख्यान रख दिया। वे स्वयं माडल टाउन में ही रहते थे। व्याख्यान से वे प्रभावित हुए। सत्संग के पश्चात् मुझे अपने घर पर भोजन करने को कहा। मैं उनके साथ चला गया।

वे स्वयं मुझे भोजन करवाने लगे। मैंने कहा कि आप भी बैठिए। मेरे बहुत कहने पर भी मेरे प्रिंसिपल साहब न माने। घर पर सेवक भी था। उसे भी भोजन न लाने दिया। स्वयं ही परोसने लगे। मुझे प्रतिष्ठित अतिथि बनाकर एक ओर बैठकर आर्यसमाज विषयक चर्चाएँ करते रहे। यह दृश्य मुझे कभी भूलता नहीं।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ईसाई धर्मान्तरण का एक कुत्सित तरीका- प्रार्थना से चंगाई

- डॉ. विवेक आर्य

विश्व इतिहास इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हिन्दू समाज सदा से शांतिप्रिय समाज रहा है। एक ओर मुस्लिम समाज ने पहले तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की कोशिश की थी, अब सूफियों की कब्रों पर हिन्दुओं के सर झुकवाकर, लव जिहाद या ज्यादा बच्चे बनाकर भारत की सम्पन्नता और अखंडता को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं दूसरी ओर ईसाई समाज हिन्दुओं को ईसा मसीह की भेड़ बनाने के लिए रुपये, नौकरी, शिक्षा अथवा प्रार्थना से चंगाई के पाखंड का तरीका अपना रहे हैं।

समाचार पत्र में छपी खबर की चर्च द्वारा दिवंगत पोप जॉन पॉल द्वितीय को संत घोषित किया गया है ने सेमेटिक मतों की धर्मातरण की उसी कुटिल मानसिकता की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। पहले तो हम यह जाने कि यह संत बनाने की प्रक्रिया क्या है?

सबसे पहले ईसाई समाज अपने किसी व्यक्ति को संत घोषित करके उसमें चमत्कार की शक्ति होने का दावा करते हैं। विदेशों में ईसाई चर्च बंद होकर बिकने लगे हैं और भोगवाद की लहर में ईसाई मत मृतप्राय हो गया है। इसलिए अपनी संख्या और प्रभाव को बनाये रखने के लिए एशिया में वह भी विशेष रूप से भारत के हिन्दुओं से ईसाई धर्म की रक्षा का एक सुनहरा सपना वेटिकन के संचालकों द्वारा देखा गया है। इसी श्रृंखला में सोची समझी रणनीति के अंतर्गत पहले भारत से दो हस्तियों को नन से संत का दर्जा दिया गया था।पहले मदर टेरेसा और बाद में सिस्टर अलफोंसो को संत बनाया गया था और अब जॉन पॉल को घोषित किया गया है।

यह संत बनाने की प्रक्रिया अत्यंत सुनियोजित होती है। पहले किसी गरीब व्यक्ति का चयन किया जाता है। जिसके पास इलाज करवाने के लिए पैसे नहीं होते, जो बेसहारा होता है, फिर यह प्रचलित कर दिया जाता है कि बिना किसी ईलाज के केवल मात्र प्रार्थना से उसकी बीमारी ठीक हो गई और यह कृपा एक संत के चमत्कार से हुई। गरीब और बीमारी से पीड़ित जनता को यह सन्देश दिया जाता है कि सभी को ईसा मसीह को धन्यवाद देना चाहिए और ईसाइयत को स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि पगान पूजा अर्थात् हिन्दुओं के देवता जैसे श्रीराम और श्रीकृष्ण में चंगाई अर्थात् बीमारी को ठीक करने की शक्ति नहीं हैं। अन्यथा उनको मानने वाले कभी के ठीक हो गए होते।

....जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मातरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ, तो मदर टेरेसा ने प्रधान मंत्री को पत्र लिख कर कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियां जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है और उनका असली प्रयोजन तो ईसाई धर्मान्तरण है।....

अब जरा ईसाई समाज के दावों को परीक्षा की कसौटी पर भी परख लेते हैं- मदर टेरेसा जिन्हें दया की मूर्ति, कोलकाता के सभी गरीबों को भोजन देने वाली, अनाथ एवं बेसहारा बच्चों को आश्रय देने वाली, जिसने अपने जन्म देश को छोड़ कर भारत के गटरों से अतिनिर्धनों को सहारा दिया, जो कि नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता थी, एक नन से संत बना दी गयी की वास्तविकता से कम ही लोग परिचित हैं। जब मोरारजी देसाई की सरकार में धर्मातरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ, तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियां जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है और उनका असली प्रयोजन तो ईसाई धर्मान्तरण है।

यही मदर टेरेसा दिल्ली में दलित ईसाईयों के लिए आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थीं। महाराष्ट्र में 1947 में एक चर्च के बंद होने पर उसकी संपत्ति को आर्यसमाज ने खरीद लिया। कुछ दशकों के पश्चात् ईसाईयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज को देख लेने की धमकी दी गई थी।

प्रार्थना से चंगाई में विश्वास रखने वाली मदर टेरेसा खुद विदेश जाकर तीन बार आँखों एवं दिल की शल्य चिकित्सा करवा चुकी थी। यह जानने की सभी को उत्सुकता होगी कि हिन्दुओं को प्रार्थना से चंगाई का सन्देश देने वाली मदर टेरेसा को क्या उनको प्रभु ईसा मसीह अथवा अन्य ईसाई संतों की प्रार्थना द्वारा चंगा होने का विश्वास नहीं था जो वे शल्य चिकित्सा करवाने विदेश जाती थी?

अब सिस्टर अलफोंसो का उदहारण लेते हैं। वह केरल की रहने वाली थीं। अपने करीब तीन दशकों के जीवन में वे करीब 20 वर्ष तक अनेक रोगों से स्वयं ग्रस्त रही थीं। केरल एवं दक्षिण भारत में निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने की प्रक्रिया को गति देने के लिए संभवत: उन्हें भी संत का दर्जा दे दिया गया और यह प्रचारित कर दिया गया कि उनकी प्रार्थना से भी चंगाई हो जाती हैं।

अभी हाल ही में सुर्खियों में आये दिवंगत पोप जॉन पॉल स्वयं पार्किन्सन रोग से पीड़ित थे और चलने-फिरने से भी असमर्थ थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना पद अपनी बीमारी के चलते छोड़ा था।

पोप जॉन पॉल को संत घोषित करने के पीछे कोस्टारिका की एक महिला का उदाहरण दिया जा रहा है जिसके मस्तिष्क की व्याधि का ईलाज करने से चिकित्सकों ने मना कर दिया था। उस महिला द्वारा यह दावा किया गया है कि उसकी बीमारी पोप जॉन पॉल द्वितीय की प्रार्थना करने से ठीक हो गई है। पोप जॉन पॉल चंगाई करने की शक्ति से संपन्न हैं एवं इस करिश्मे अर्थात् चमत्कार को करने के कारण उन्हें संत का दर्ज दिया जाये।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य आपस में वैमनस्य फैलाना नहीं है अपितु पाखंड खंडन है। ईसाई समाज से जब यह पूछा जाता है कि आप यह बतायें कि जो व्यक्ति अपनी खुद की बीमारी को ठीक नहीं कर सकता, जो व्यक्ति बीमारी से लाचार होकर अपना पद त्याग देता है उस व्यक्ति में चमत्कार की शक्ति होना पाखंड और ढोंग के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अपने आपको चंगा करने से उन्हें कौन रोक रहा था?

यह तो वही बात हो गई की खुद निसंतान मर गए औरों को औलाद बक्शते हैं। ईसाई समाज को जो अपने आपको पढ़ा लिखा समाज समझता है। इस प्रकार के पाखंड में विश्वास रखता है यह बड़ी विडम्बना है। मदर टेरेसा, सिस्टर अल्फोंसो, पोप जॉन पॉल सभी अपने जीवन में गंभीर रूप से बीमार रहे। उन्हें चमत्कारी एवं संत घोषित करना केवल मात्र एक छलावा है, ढोंग है, पाखंड है, निर्धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने का एक सुनियोजित षडयन्त्र है। अगर प्रार्थना से सभी चंगे हो जाते तब तो किसी भी ईसाई देश में कोई भी अस्पताल नहीं होने चाहिए, कोई भी बीमारी हो जाओ चर्च में जाकर प्रार्थना कर लीजिये। आप चंगे हो जायेंगे। खेद है कि गैर ईसाईयों को ऐसा बताने वाले ईसाई स्वयं अपना ईलाज अस्पतालों में करवाते हैं।

मेरा सभी हिन्दू भाइयों से अनुरोध है कि ईसाई समाज के इस कुत्सित तरीके की पोल खोल कर हिन्दू समाज की रक्षा करें और सबसे आवश्यक अगर किसी गरीब हिन्दू को ईलाज के लिए मदद की जरुरत हो तो उसका धन आदि से अवश्य सहयोग करें जिससे वह ईसाईयों के कुचक्र से बचा रहे।

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

39. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 द्वारा एकत्रित दानराशि की सूची

मै. मुंजाल शोवा लिमि.	5000
श्री राजीव भटनागर	1000
श्री संजीव खुराना	2000
श्री मूलराज अरोड़ा	1000
श्री अशोक चोपड़ा	2000
श्रमती सत्या ढींगरा	2000
श्रीमती उषा मरवाह	2000
श्रीमती सतीश मेहता	500
श्रीमती आदर्श भसीन	2000
श्रीमती सुनीता कपूर	1000
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	2000
श्री विजय भाटिया	1000
श्री सतीश सहाय	5000
श्रीमती अमृत पॉल	2000
40. श्रीमती उषा सिड़ाना	1100
41. श्रीमती सुन्दरशान्ता चड्ढा	2000
42. श्री वेद प्रकाश, गुरुग्राम	1000
43. श्री मदन मोहन, पुांडिचेरी	11000
44. श्रीमती ईश्वर रानी मेहता	2000
45. श्री गणेशदास गरिमा गोयल	5000
46. श्री जगवीर सिंह आर्य	500
47. श्रीमती अंजली कपूर	20000
48. श्री प्रवीण भाटिया	4000
49. श्री इन्द्रदेव गुप्ता	2000
50. श्री वेद प्रकाश सिंघल	500
51. श्री राजेन्द्र आर्य	500
52. डॉ. विवेक आर्य	11000
53. श्री धर्मपाल आर्य	500
54. श्री धर्मेन्द्र आर्य	1100
55. श्री सोमदेव मल्होत्रा	1000

- क्रमश:

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।-सम्पादक

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** आरम्भ किया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने हैं। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

हमारा पता है-

'सम्पादक', आर्य सन्देश
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रथम पृष्ठ का शेष

सभा के साहित्य स्टाल पर लगभग 70 हजार लोगों पहुंचे।

आर्यजनों द्वारा उपलब्ध कराई गई सहयोग राशि से सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराई गई। नौ दिन तक चले पुस्तक मेले में लगभग 15 हजार सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये मूल्य पर उपलब्ध करवाए गये। सत्यार्थ प्रकाश वितरित करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि एक व्यक्ति को केवल एक ही सत्यार्थ प्रकाश दिया जाए जिससे अधिक से अधिक लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध हो सके। महर्षि दयानन्द और वेद की विचारधारा को प्रत्येक जनमानस तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को आर्य महानुभावों के सहयोग से जनता तक पहुंचाने के लिए मात्र 10 रुपये में सत्यार्थ प्रकाश वितरित करने की अपील की गयी थी। आर्य महानुभावों ने दिल खोलकर सभा के इस महाकार्य के लिए सहयोग दिया। इसके साथ-साथ वेद, उपनिषद्, वेदांग, दर्शन एवं अन्य वैदिक आर्ष साहित्य पर भी मेले में विशेष छूट प्रदान की गई।

मेले में कुल वैदिक साहित्य की बिक्री लगभग आठ लाख से अधिक की दर्ज की गई।

पुस्तक मेले में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अंग्रेजी साहित्य प्रेमियों के लिए हॉल नं. 18 में स्टाल नं. 304 लगाया गया जिसमें भारतीय जनमानस के अतिरिक्त विदेशी पर्यटकों को भी सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य क्रय करते हुए देखा गया।

पुस्तक मेले में स्थापित समस्त स्टालों की बुकिंग आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से प्रदत्त सहयोग से कराई गई थी। आर्ष साहित्य बिक्री के साथ-साथ लोगों की शंकाओं के समाधान हेतु सभा की ओर से विशेष व्यवस्था की गयी जिसमें

पुस्तक मेले के अवसर पर वैदिक साहित्य का चयन करती पुस्तक प्रेमियों की भीड़

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज ने निर्धन महिलाओं को कम्बल बांटे

आर्यसमाज सदैव ही मानव कल्याणकारी कार्यों को करने में अग्रणी रहता है। सर्दी के इस मौसम में सभी को गर्म वस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है। ये विचार 13 जनवरी को आर्यसमाज जिला सभा द्वारा जरूरतमंद महिलाओं को कम्बल वितरित करते डीएवी स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने उक्त विचार व्यक्त किये। आर्यसमाज जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के साथ आर्यसमाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, तलवंडी के प्रधान आर. सी. आर्य, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौशल, विज्ञाननगर के पूर्व प्रधान जे.एस.दुबे, तलवण्डी के पूर्व मंत्री लालचंद आर्य, एंव पंडित शोभाराम आर्य ने विज्ञाननगर आर्य समाज के मुख्य द्वारा पर जरूरतमंद 35 महिलाओं व 5 पुरुषों को कम्बल दिये।

विश्व पुस्तक मेला- 2017 में पहली बार साहित्य मंच पर

'मनु का विरोध क्यों?' - वैचारिक गोष्ठी सम्पन्न

विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान नई दिल्ली में आर्यसमाज द्वारा ''मनु का विरोध क्यों'' विषय पर वैचारिक बैठक 15 जनवरी, 2017 को हाल नम्बर 8 में साहित्य मंच पर सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में डॉ. विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ द्वारा मनुस्मृति के विषय में आर्यसमाज की मान्यताओं को प्रस्तुत किया। वर्तमान में हमारे देश की राजनीति ने हिन्दू समाज की सबसे बड़ी बुराई जातिवाद को समाप्त करने के स्थान पर इतना प्रोत्साहन दिया है कि समाज का एक विशेष वर्ग मनुवाद, ब्राह्मणवाद के नाम पर सारा दिन अनर्गल प्रलाप करता फिरता है। विडम्बना देखिये कि इन सभी में से किसी ने मनुस्मृति को पुस्तक आकार तक में अपने जीवन में नहीं देखा। उसका स्वाध्याय, चिंतन और मनन तो बहुत दूर की बात थी। स्वामी दयानंद ऐसे पहले व्यक्तित्व थे जिन्हेंने अपने अन्वेषण से यह सिद्ध किया कि मनुस्मृति में प्रक्षेप अर्थात् मिलावट हुई है। इस कारण से यह प्रतीत होता है कि मनुस्मृति जातिवाद, नारी को निम्न स्तर, मांसाहार आदि का समर्थन करती है। सत्य यह है कि प्रक्षेप हटाने के पश्चात् मनुस्मृति के मौलिक रूप को स्वीकार करने में समाज का हित है। मनु सृष्टि के प्रथम विधि निर्माता हैं। मनुस्मृति वेदों के अनुकूल धर्मशास्त्र है जिसका उद्देश्य समस्त मानव जाति को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध करवाना है। इसलिए मनुस्मृति को जलाने से कुछ नहीं होगा। अपितु उसमें दिए गए ज्ञान के भंडार को ग्रहण कर उसपर आचरण करने में सभी का हित है।

आर्यसमाज द्वारा आर्यसमाजों के बाहर निकल कर सार्वजनिक मंचों से वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया जाये तभी आप जनसाधारण तक पहुचेंगे। यह वैचारिक बैठक उसी प्रचार नीति का भाग थी। आशा है बाकी आर्यजन भी इस विचार को बढ़ाने में अपना योगदान देंगे। इस कार्यक्रम में शंका समाधान सबसे रोचक विषय रहा। अनेक डॉक्टर, इंजीनियर, सरकारी कर्मचारियों से लेकर कॉलेज के छात्रों ने जातिवाद के विरुद्ध कार्य करने का विचार शंका समाधान कार्यक्रम के अन्तर्गत रखा। आर्यसमाज के पक्ष को सुनकर वहां पर उपस्थित मुस्लिम एवं दलित श्रोताओं में कोई विरोधाभास नहीं दिखा क्योंकि यह सत्य सिद्धांतों पर आधारित था।

इस कार्यक्रम का मंच संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया तथा श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का एवं प्रमाणिक सटीक उनकी शंकाओं को निर्मूल किया। उपस्थित आर्यजनों में सर्वश्री देव शर्मा आर्य विद्वान, राजकुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज मुलतान नगर, अजय आर्य वैदिक साहित्य प्रकाशक ने मंच की शोभा बढ़ाई। बड़ी संख्या में लोगों ने कार्यक्रम को सुना। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार लिखित मनु का विरोध क्यों? लघु पुस्तिका को सभी श्रोताओं में वितरित किया गया एवं अजय आर्य जी द्वारा प्रकाशित पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी रचित मनुस्मृति को खरीदने की प्रेरणा दी गई।

- नरेंद्र सोनी आय

विश्व पुस्तक मेले में सहित्य मंच पर आयोजित 'मनु का विरोध क्यों?' पर वक्तव्य देते डॉ. विवेक आर्य जी एवं श्रोताओं से भरा हॉल नं. 8

Continue from last issue :-

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Life : Fresh and Enlightened

"Mind has come back to me again; life has come back to space me again. The breath and the spirit have come back to me again. Again the vision and again the hearing have come back to me. May the Lord of Justice protect me in this new life from dishonourable evils. O illuminating intellect, grant us to realise Him so as to recall bliss for the soul in the present life."

"I have heard there are two paths for mortals to follow. One, that of the elders who perform normal charity. They tread on the common path. The other of the enlightened ones established on austerity and wisdom-the higher and nobler path. All humanity who exist between the sky and the earth have to go by either of these two, May I cherish, O Merciful Lord, to tread ever on the joyous, enlightened path".

पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः पुनरात्मा मऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं मऽआगन्। वैश्वानरोऽअधब्धस्तनूपाऽ अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्।।

(Yv.iv.15)

द्वे सृतीऽअशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्। ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च।।

(Yv.XIX.47)

Punarmanah punarayurma agan punah pranah punaratma ma agan punascaksuh punah srotam ma agan.

vaisvanaro'adabdhastanupa agnirnah patu duritadavadyat..

Dve srti asrnavam pitrna maham devanamuta martya nam.

tabhyamidam visvame jatsameti yadantara pitaram mataram ca..

Invigorating the Self

"Wake up, O Soul, keep the sacrifice ever alert and watchful. Be engaged with devotion in benevolent deeds. May all the enlightened souls in this life of sacrifice and in higher realms, occupy position along with you.'

O Soul, spring to this life accepting it as your right place. Be grateful for the justice of the Lord. With a mind filled with determination, control your senses and body organs. Regulate your vital breath. O sovereign of the body, abide by the rule of divine law. May the Lord settle you in your kingdom that may last long. Face succesfully a thousand opponents at a time. May you move gloriously over these worlds rejuvenated with fresh vigour and spin out the traditional thread of off-springs with wisdom. May you ultimately reach the sorrowless world to enjoy eternal bliss. May you carry the fire of sacrifice to the bounties of Nature illuminating the highest realm with bright splen*dour.*

उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्तौं सॅसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। (Yv. XV.54)

Udbudhyasvagne prati jagrhi tvamistapurte samsrjethamayam ca.

asmintsdhasthe adhyuttara smin visve deva yajamanasca sidata..

Culture Engrafted in the Heart of Man

Culture is the index of developoment of man's inner qualities whereas civilisation is an indicator of physical advancment. To sum up, civilisation is what we use and culture is what we are, Culture points out to love, mercy, devotion, self-restraint and other noble qualities. Civilisation denotes the social condition of transport, communication, apperal, education etc. Civilisation changes in course of time but the nature of culture does not need any change.

The verse says : "The Lord of creation bestowed his never-exhausting wealth and nourishment like sunrays, water, wind, land, etc. He also inserted the elements of culture into the heart of man. This is the first and excellent culture and He is the first venerable, friendly and adorable".

In millenniums of years, the nature of culture remained the same without any need for modification. On the other hand, science and technology discover finer and newer objects. This gives newer dimension to civilisation. But cultural elements like truth, compasion, love are enhanced with use, whereas material objects diminish in quantity when used.

O Lord, you are the true Friend and Guide of man having sown the seed of culture in human heart.

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम। सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्नि।। (YV.VII.14)

Acchinnasya te deva soma suviryasya rayasposasya daditarah syama.

sa prathama samskrtirvisva vara sa prathamo varuno mitro agnih..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 19 (ब)

महर्षि पाणिनि एवम् व्याकरण शास्त्र की अनुपम कृति अष्टाध्यायी

गतांक से आगे....

शब्दों/पदों के निर्वचन के लिए, प्रकृति के आधार पर पाणिनि ने छः प्रकार के सूत्रों की रचना की है।

सञ्ज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च। अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधम् सूत्रं मतम् ।।

1 सञ्ज्ञा सूत्र - नामकरणं सञ्ज्ञा - तकनीकी शब्दों का नामकरण ।

2 परिभाषा सूत्र

अनियमे नियमकारिणी परिभाषा।

3 विधि सूत्र - विषय का विधान।

4 नियम सूत्र-बहुत्र प्राप्तो संकोचनं हेतु।

5 अतिदेश सूत्र

6 अधिकार सूत्र - एकत्र उपात्तस्य अन्यत्र व्यापारः अधिकारः

पाणिनीय व्याकरण के चार भाग

(क) अष्टाध्यायी - इसमें व्याकरण के लगभग 4000 सूत्र हैं।

(ख) शिवसूत्र या माहेश्वर सूत्र - यह प्रत्याहार बनाने में सहायक है। प्रत्याहार के प्रयोग से व्याकरण के नियम संक्षिप्त रूप में पूरी स्पष्टता से कहे गये हैं।

(ग) धातुपाठ - इस भाग में लगभग 2000 धातुओं की सूची दी गयी है। इन धातुओं को विभिन्न वर्गों में रखा गया है।

(घ) गणपाठ - यह 261 शब्दों का संग्रह है।

पाणिनीय व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ

(१) सम्पूर्णता - पाणिनि का व्याकरण संस्कृत भाषा का अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण करता है। यह उस समय की बोलचाल की मानक भाषा का तो वर्णन करता ही है, इसके साथ ही वैदिक संस्कृत और संस्कृत के क्षेत्रीय प्रयोगों का भी वर्णन करता है। यहाँ तक कि पाणिनि ने भाषा के सामाजिक-भाषिक (sociolinguistic) प्रयोग पर भी प्रकाश डाला है।

(2) संक्षिप्तता - पाणिनि का व्याकरण सम्पूर्ण होने के साथ ही इतना छोटा है कि लोग इसे याद करते आये हैं।

(3) प्रयोग-सरलता

(4) सामान्य - यद्यपि पाणिनि ने अपना व्याकरण संस्कृत के लिये रचा, किन्तु इसकी युक्तियाँ और उपकरण सभी भाषाओं के व्याकरण के विश्लेषण में प्रयुक्त की जा सकती हैं।

अष्टाध्यायी के बाद

अष्टाध्यायी के साथ आरम्भ से ही अर्थो की व्याख्यापूरक कोई वृत्ति भी थी जिसके कारण अष्टाध्यायी का एक नाम, जैसा पतंजलि ने लिखा है, वृत्तिसूत्र भी था और भी, माथुरीवृत्ति, पुण्यवृत्ति आदि वृत्तियाँ थीं जिनकी परम्परा में वर्तमान काशिकावृत्ति है। अष्टाध्यायी की रचना के लगभग दो शताब्दी के भीतर कात्यायन ने सूत्रों की बहुमुखी समीक्षा करते हुए लगभग चार सहस्र वार्तिकों की रचना की जो सूत्रशैली में ही हैं। वार्तिकसूत्र और कुछ वृत्तिसूत्रों को लेकर पतंजलि ने महाभाष्य का निर्माण किया जो पाणिनीय सूत्रों पर अर्थ, उदाहरण और प्रक्रिया की दृष्टि से सर्वोपरि ग्रंथ है।

अष्टाध्यायी में वैदिक संस्कृत और पाणिनि की समकालीन शिष्ट भाषा में प्रयुक्त संस्कृत का सर्वागपूर्ण विचार किया गया है। वैदिक भाषा का व्याकरण अपेक्षाकृत और भी परिपूर्ण हो सकता था। पाणिनि ने अपनी समकालीन संस्कृत भाषा का बहुत अच्छा सर्वेक्षण किया था। इनके शब्दसंग्रह में तीन प्रकार की विशेष सूचियाँ आई हैं : (1) जनपद और ग्रामों के नाम, (2) गोत्रों के नाम, (3) वैदिक शाखाओं और चरणों के नाम। इतिहास की दृष्टि से और भी अनेक प्रकार की सांस्कृतिक सामग्री, शब्दों और संस्थाओं का सन्निवेश सूत्रों में हो गया है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

'पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए...'

गीत को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

airtel	AIRTEL	DIAL 543211 4684461	Idea	Set Tune	DIAL 56789 5021683
BSNL	BSNL E & S	SMS BT 5021683 to 56700	BSNL	BSNL N & W	SMS BT 804061 to 56700
vodafone	Vodafone	SMS BT 5021683 to 56789	TATA	TATA	SMS CT 5021683 to 543211
MTNL	MTNL	SMS PT 5021683 to 56789	AIRCEL	AIRCEL	SMS DT 804061 to 53000
RELIANCE	Set Tune	SMS CT 6312078 to 51234			

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर लॉंग टेनिस लॉन का नामकरण

आर्यसमाज कीर्ति नगर एवं पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रयासों से उत्तरी दिल्ली नगर निगम द्वारा कीर्ति नगर स्थित लॉंग टेनिस लॉन का नामकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से किया जा रहा है। नामकरण समारोह रविवार 29 जनवरी को प्रातः 9:30 बजे किया जाएगा। *- सतीश चड्ढा, मन्त्री*

वैदिक प्रारम्भिक पाठशाला का शुभारम्भ

भीलवाड़ा शहर में वैदिक प्रारम्भिक पाठशाला (मातृ-पितृ छाया) का शुभारम्भ 8 जनवरी, 2017 को ऋषि उद्यान अजमेर से पधारें उपाचार्य सत्येन्द्र जी व मुमुक्षु मुनि द्वारा ओ३म् पताका फहराकर व यज्ञानुष्ठान के द्वारा प्रारम्भ हुआ यहां कक्षा 1 से 5 वीं तक की शिक्षा बालकों के लिए वस्त्र,भोजन व शिक्षा पूर्णत: निःशुल्क है, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कराया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथियों को ऋषि मिशन परिवार की ओर से सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये। *- नन्द किशोर आर्य*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। *- सम्पादक*

आर्य समाज रावतभाटा (कोटा) का
50 वाँ वार्षिक उत्सव

आर्य समाज रावतभाटा का 50 वाँ वार्षिक उत्सव 11 व 12 फरवरी-2017 को स्वर्णजयंती समारोह के रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य यशवीर, भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री एवं स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद सीकर) पधार रहें हैं।

इस अवसर पर आर्य समाज रावतभाटा की 50 वर्षो की उपलब्धियों को दर्शाने वाली भव्य स्मारिका का विमोचन किया जायेगा। *- रमेश चन्द्र भाट, उपमंत्री*

चरित्र निर्माण शिविर

आर्य उपप्रतिनिधि सभा फर्रूखाबाद के तत्त्वावधान में 14 जनवरी से 11 फरवरी 2017 के मध्य चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के सानिध्य में किया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के विद्वान, भजनोपदेशक, संन्यासियों द्वारा वेद प्रचार किया जाएगा। शिविर के अन्तर्गत प्रतिदिन यज्ञ तथा योग शिविर का आयोजन भी किया जायेगा।

-संदीप कुमार आर्य

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेदकथा 1 से 4 फरवरी 2017

समय : प्रातः 8-11 सायं 1 से 4 बजे
स्थान - वेद सदन तिवारी कालोनी, निकट कथा पांडाल आई टी आई रोड होशंगाबाद
कथाकार : डॉ.श्री शिवदत्त पाण्डेय
वेदपाठी: स्नातिकाएं, गुरुकुल शिवगंज
भजनोपदेश : श्रीअजय आर्य एवं लोकेन्द्र

प्रदेश केहबाहर से पधारे सभी आर्य महानुभावों की रुकने की व्यवस्था आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद में होगी

- आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
दीपक सचदेव (9425495246)

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

वैदिक विद्वान आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य अतुल शास्त्री, आचार्य ऋषिदेव, आचार्य नवीन, आचार्य हरिओम शास्त्री, आचार्य ऋषिपाल शास्त्री, श्री सत्य प्रकाश 'साधक', डॉ. कर्णदेव शास्त्री ने लोगों की शंकाओं-जिज्ञासाओं का समाधान किया। स्टालों पर लगी भीड़ में मुस्लिमों को देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनमें सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य को पढ़ने की काफी उत्सुकता है। इस बार भारी मात्रा में मुस्लिमों ने वैदिक साहित्य न सिर्फ देखा बल्कि उनके द्वारा खरीदा भी गया। दिल्ली व आस-पास के क्षेत्रों से आये आर्य समाज के विभिन्न पदाधिकारियों-आर्य जनों ने पुस्तक मेले में बढ़चढ़कर सहयोग किया और घूम-घूमकर आम जनता को 10 रुपये में सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध करवाए।

पुस्तक मेला में पहली बार आर्य समाज द्वारा मनु का विरोध क्यों विषय पर वैचारिक बैठक 15 जनवरी को हाल नम्बर 8 में साहित्य मंच पर सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने किया। इस बैठक में डॉ. विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ द्वारा मनुस्मृति के विषय में आर्यसमाज की मान्यताओं को प्रस्तुत किया गया। डॉ. विवेक ने अपने वक्तव्य में कहा, ''वर्तमान में हमारे देश की राजनीति ने हिन्दू समाज की सबसे बड़ी बुराई जातिवाद को समाप्त करने के स्थान पर इतना प्रोत्साहन दिया है कि समाज का एक विशेष वर्ग मनुवाद, ब्राह्मणवाद के नाम पर सारा दिन अनर्गल प्रलाप करता फिरता है। विडम्बना देखिये कि इन सभी में से किसी ने मनुस्मृति को पुस्तक आकार तक में अपने जीवन में नहीं देखा। उसका स्वाध्याय, चिंतन और मनन तो बहुत दूर की बात थी। स्वामी दयानंद ऐसे पहले व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने अन्वेषण से यह सिद्ध किया कि मनुस्मृति में प्रक्षेप अर्थात् मिलावट हुई है। सत्य यह है कि प्रक्षेप हटाने के पश्चात् मनुस्मृति के मौलिक रूप को स्वीकार करने में समाज का हित है।''

मेले में आर्यजनों ने अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के वैदिक साहित्य स्टालों पर पहुंचकर कार्य कर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया। साहित्य प्रचार स्टालों पर निःस्वार्थभाव से अपनी सेवाएं प्रदान करने वाले महानुभावों में सर्वश्री धर्मपाल आर्य, शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, रमेश चन्द्र आर्य, सुरेश राजपूर, यतीन्द्र राजपूत, अरुण प्रकाश वर्मा, विरेन्द्र सरदाना, श्रीमती सुषमा सरदाना, श्रीमती वीना आर्य, संजय आर्य, आशीष, आशोक गुप्ता सुरेन्द्र चौधरी, रामेश्वर गुप्ता, शीश पाल, प्रद्युम्न आर्य, सुखबीर सिंह, श्रीमती विद्यावती, श्रीमती सुषमा शर्मा, ओम प्रकाश, खेत्रपाल, नवनीत अग्रवाल, मानधाता सिंह, सतीश चड्ढ़ा, गया प्रसाद वैद्य, आशीष, राहुल, रवि प्रकाश, अनिरुद्ध, ओमकार सिंह, जितेन्द्र, पंकज गुप्ता इत्यादि। उपरोक्त नामों के अतिरिक्ति जिन महानुभावों ने अपनी सेवाएं मेले में अर्पित की उनका नाम यदि प्रकाशित होने से रह गया हो तो क्षमा प्रार्थी हूं। जिन दानी महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश छूट में अपना आर्थिक सहयोग दिया जिस कारण इतनी भारी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश आम लोगों तक पहुंचाने में सफल हो सके उन सबका हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

-सुखबीर सिंह, संयोजक

देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।

देश धर्म की भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
राणा सांगा ने बाबर को, नाकों चने चबाए।
महाराणा प्रताप शिवाजी, मुगलों से टकराए।।
तेग बहादुर गोविंद सिंह ने, दुष्टों का मुंह मारा।
बंदा वैरागी नलवा को, मान गया जग सारा।।
दुर्गा रानी किरण भई थीं, देश भक्त क्षत्राणी।
देशवासियों। याद करो अब, वीरो की कुर्बानी।।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी न घबराया।।
तात्या टोपे तुकाराम, नाना को साथ लगाया।
वीर कुंवर सिंह, नाहर सिंह ने, भारी युद्ध मचाया।।
लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से, खूबलड़ी मर्दानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
वीर सुभाष चन्द्र ने था, गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया।।
विस्मिल, शेखर, भगत सिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम अशफाक वीर ने, हंसकर फांसी खाई।।
मत भूलो, लंदन में उधम की पिस्तौल चलानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
वीरो के बलिदानों से ही, यह आजादी आई।
भारतवीर सपूतों ने थी, कठिन मुसीबत पाई।।
आजादी का महत्त्व समझाओ, सभी बहिन अरु भाई।
मिलजुल करके रहना सीखो, इसमें सभी भलाई।।
देश भक्त बलवान बनो तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
बनो सदा चारी तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी संगति त्यागो प्यारो। जग में आदर पाओ।।
वैदिक धर्मी बनो, देश भारत की शान बढ़ाओ।
'नन्दलाल' तुम आजादी के, मधुर तराने गाओ।।
करो देश का ध्यान छोड़ दो करनी तुम मनमानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।

-पं. नन्दलाल 'निर्भय', पलवल

शोक समाचार

श्री हरिओम बंसल को पितृशोक

आर्य समाज झिलमिल कालोनी, दिल्ली के प्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री हरिओम बंसल जी के पूज्य पिता श्री रमेश चन्द जी बंसल का दिनांक 11 जनवरी, 2017 की सायंकाल 6 बजे आकस्मिक निधन हो गया। आगामी दिन उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। वे अपने पीछे तीन पुत्रों एवं दो पुत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा सोमवार 16 जनवरी को समुदाय भवन ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव में सम्पन्न हुई जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के साथ अन्य अनेक संस्थाओं व निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

होम्योपैथिक चिकित्सक चाहिए

आर्य समाज अशोक नगर, वैदिक मार्ग नई दिल्ली -110018 में संचालित चिकित्सालय के लिए एक होम्योपैथिक डॉक्टर की आवश्यकता है। सम्पर्क करें-

श्री प्रकाशचन्द्र आर्य
प्रधान, मो. 09212175772

सोमवार 16 जनवरी, 2017 से रविवार 22 जनवरी, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 जनवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 जनवरी 2017

प्रतिष्ठा में,

अहमदाबाद में 501 कुण्डीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित

आर्य समाज अहमदाबाद और वैदिक संस्थान–ओढव द्वारा संचालित अहमदाबाद में वस्त्राल विस्तार के कंकुबाग पार्टी प्लाट में 501 कुंडीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस त्रिदिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ 23 दिसंबर 2016 को आचार्य श्री ज्ञानेश्वरजी (दर्शनाचार्य, वानप्रस्थ साधक आश्रम- रोजड़) की अध्यक्षता में किया गया। तीन दिनों तक चलने वाले इस शिविर के कुल छ: सत्रों में आचार्य श्री ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण के साथ-साथ ईश्वर का ध्यान, देश, समाज और जाति के बारे में हमारे कर्त्तव्य का बोध कराया। पंडाल में लगभग 1800 लोगों की उपिस्थिति में आचार्य श्री ज्ञानेश्वरजी ने अपने- अपने घर में प्रतिदिन, साप्ताहिक, पाक्षिक यज्ञ करने का संकल्प करवाया और व्रतपत्र भी भरवाए। कुल 500 से अधिक व्यक्तियों ने अपने-अपने घरों में यज्ञ करने के लिए संकल्प लिया। शिविर में शिविरार्थियो ने यज्ञ सीखने के साथ-साथ यज्ञ प्रदर्शनी का भी आनन्द उठाया।

स्वास्थ्य चर्चा — भूख न लगने पर

अक्सर बीमारी के बाद भूख कम लगती है या कुछ भी खाने की इच्छा नहीं होती। ऐसे में निम्न नुस्खे आज़माकर देखें-

1. काली मिर्च पिसी एक-एक ग्राम प्रात:-सायं पानी से प्रयोग करें।
2. सौंठ, पीपल, भांग के बीज 10-10 ग्राम पीसकर 3-3 ग्राम प्रात:-सायं पानी से लें।
3. मीठा सोडा (सोडा बाई कार्ब) 5 ग्राम भोजन से एक घण्टा पहले कम गर्म एक कप पानी में घोलकर तीन चार दिन लगातार लें।
4. लहसन की 4 फाकें छीलकर घी चुपड़कर प्रात: सायं गर्म पानी से लें।
5. अजवायन, सौंठ 20-20 ग्राम नौसादर 5 ग्राम कूट छानकर नीबू के रस में मटर बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। 2-2 गोलियां प्रात: सायं पानी से लें।
6. कलौंजी 50 ग्राम को सिरके में रात को भिगोएं। सूखने पर पीस लें। फिर शहद में मिलाकर 4-5 ग्राम प्रात: चाटें।
7. अदरक नीबू का रस 50-50 ग्राम में लाहौरी नमक पिसा मिलाकर तीन दिन धूप में रखें। फिर भोजन के बाद दोनों समय एक-एक चम्मच पीयें। इससे भूख लगेगी और भोजन भी हजम होगा।
8. सौंठ, अजवायन 20-20 ग्राम, नौसादर 5 ग्राम कूट छानकर नीबू के रस में भिगो दें। सूखने पर पीस लें। 2-2 ग्राम गर्म पानी से प्रात: सायं लें।
9. कपर्दक भस्म 2 रत्ती पीपला मूल पिसी एक ग्राम को शहद से प्रात: सायं लें।
10. मल्ल सिन्दूर आधा रत्ती को शहद और अदरक रस से प्रात: सायं दें।
11. अग्निवर्द्धक वटी एक-एक गोली गर्म पानी से दिन में तीन बार लें या चूसें।
12. सितोपलादि चूर्ण 2-2 ग्राम शहद मिलाकर प्रात:-सायं लें।

जल्दी करें! जल्दी करें!! जल्दी करें!!!

स्टाक समाप्त करने हेतु

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2017

मात्र 1000/-रुपये सैकड़ा

अतिरिक्त शुल्क पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा उपलब्ध। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह